हालावाद की पृष्ठभूमि

हिन्दी तृतीय द्वितीय वर्ष, पत्र-5

हरिवंशराय बच्चन हिंदी कविता को लोक-मानस और लोक-रुचि के बहुत करीब लाने वाले छायावादोत्तर काल के प्रथम कवि हैं | इनकी वाणी और शब्द-विधान में लोक-संस्कार की सहजता और सरस मधुरिमा है | छायावादी वायव्य अभिव्यक्ति-प्रणाली से ये हिंदी काव्य को सहजता के उद्दाम प्रवेग की ओर अनायास खींच लाए हैं |

'हालावाद' का संबंध सूफी तत्व दर्शन से है, जिसके प्रभाव में मध्यकालीन हिंदी कवि कबीर का मन मस्त हुआ था और उन्होंने मस्ती में प्रेम के गीत गाए थे, पर हिंदी का आधुनिक 'हालावाद' न तो फारस से आया है और इस पर सूफी तत्व दर्शन का ही प्रभाव है | फिट्जजेराल्ड का रुबाइयात उमर खैयाम नाम से उमर खैयाम की पचहत्तर रुबाइयों का अंग्रेजी अनुवाद 1859 में प्रकाशित हुआ | उन रुबाइयों में संसार की कठोरता की प्रतिक्रिया में खिन्न मन की पलायनवादी प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति हुई | खैयाम ने वर्तमान और उसमें भी जीवन के महत्वपूर्ण क्षण के मधुपात्र में संगृहीत आसव को चक्कर पीने और उससे अपने सारे अवसादों को विस्मृत करने पर जोर दिया | हिंदी का हालावादी दर्शन सीधे फारस या सूफी दर्शन से न आकर फिट्जजेराल्ड के अनुवाद से आया | क्षण घट के अक्षुण्ण रस का पान करने वाले बच्चन के हालावादी गीतों की मस्ती कुछ और है | परिणाम और प्रशंसा की दृष्टि से 'बच्चन' हालावादी कवियों में श्रेष्ठ स्थान के अधिकारी हैं |

बच्चन ने तन-प्याली के माध्यम से मदिरा के व्यापक अर्थ वाले प्रतीक का प्रयोग कर 'मधुशाला' का प्रणयन किया और इस प्रतीक का विस्तार करते हुए उन्होंने 'मधुबाला' और 'मधुकलश' की सृष्टि की | 'मधुशाला' सचमुच एक

प्रतीकात्मक कृति है | इसमें चार प्रमुख प्रतीक हैं - हाला, प्याला, मधुबाला और मधुशाला | इन चारों प्रतीकों के माध्यम से कवि ने जीवन-जगत के अनेक मनोभावों, सामाजिक स्थितियों, संवेदनात्मक पहलुओं को रसमय वाणी दी है | 'मधुशाला' मनोरंजक साहित्य का मयखाना नहीं है, अपितु काव्यात्मक, भावात्मक और प्रतीकात्मक काव्य का मयखाना है | वास्तव में 'मधुशाला' जीवन जीवन का लक्ष्य, मोक्ष, मोक्षस्थल, मनुष्यता, देवत्व, प्रकृति का निसर्ग सौंदर्य, तृपित-तृप्ति का आलिंगन, उल्लसित अनुराग-राग - सब कुछ एक ही साथ है | कवि जिस तत्व को वस्तु का महिमामंडन करके, उच्चतम सोपान पर बैठना चाहता है, वह उसे ही मधुशाला के रूप में डालता है | यह बच्चन जी का अद्भुत रचना-कौशल था कि वे एक ही छंद विधान, लगभग एक-सी ही शब्दावली और मात्र चार प्रतीकों के माध्यम से जीवन के महाकाव्य को वाणी दे सके |

मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश को हालावादी काव्य-पद्धति का धर्मग्रंथ कहा जा सकता है | मधुबाला और मधुकलश में भी नियति, भाग्यवाद, मरण छंद आदि मिलेंगे, पर उनमें यौवन का उल्लास, साहस और चुनौतियों का सामना करने की सपृहा है |

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय